भारतीय धर्म एवं दर्शन की अनुभूति : Indian perception to Dharma & Darshan.

Contents : (i) धर्म का शाब्दिक अर्थ अथवा धर्म है क्या।
(सूची)
(ii) धर्म के सार्वभौमिक तत्व
(iii) धर्म के सामाजिक महत्व एवं संरचना
(iv) वर्णाश्रम और धर्म में समबन्ध
(v) धर्म की भूमिका एवं महत्व
(vi) धर्म के 10 तत्व मनुस्मृति द्वारा
(vii) धर्म के 4 तत्व सनातन संस्कृति द्वारा
(viii) मनुष्य के लिए धर्म क्यों जरूरी है
(ix) भारत और विश्व में धर्म और राज्य के बीच सम्बन्ध को स्पष्ट करें। भारतीय धर्मनिरपेक्षता ने समाज को कैसे प्रभावित किया।

(i). धर्म का शाब्दिक अर्थ अथवा धर्म का अभिप्राय : सामान्य शब्दों में कहा जा सकता है कि धर्म अनेकों विश्वासों में और आचरणों की वह संगठित व्यवस्था है, जिसका सम्बन्ध कुछ अलौकिक विश्वासो तथा पवित्रता की भावना से होता है।

धर्म से सम्बिन्धत कुछ लेखकों के विचार :

- "दुर्खिम ने लिखा है"; धर्म पवित्र वस्तुओं से सम्बन्धित अनेक विश्वासों तथा आचरणों की वह व्यवस्था है, जो अपने से सम्बन्धित लोगों को एक नैतिक समुदाय में जोड़ती है। अर्थात इसका आशय है की धर्म इस बात की ओर इंगित करता है कि धर्म एक ऐसा सामाजिक तथ्य है जिसका प्रमुख कार्य अलौकिक विश्वासो के आधार पर व्यक्तियों में नैतिक गुण उत्पन्न करना तथा लोगों को एकता के बन्धन में बाँधना होता है।
- "जान्सन के अनुसार"; जान्सन का कथन है कि "धर्म कम अथवा अधिक मात्रा में कुछ अलौकिक शक्तियों, स्थानों तथा आत्माओं से सम्बन्धित विश्वासों और आचरणों की एक संगठित व्यवस्था है।
- प्रश्न यह उठता है की हिन्दु धर्म है संस्कृति ?
बात सामान्यतौर पर करें तो, हिन्दु होना जैसे एक मान्यता है वहीं हिन्दुओं के मान्यताओं को अग्रसारीत करना इसकी संस्कृति है।

संस्कृति क्या है ? किसी खास समुदायों के विचारों, परिणामो, मान्यताओं, जिवन जीने की कला, उस खास समुदायों के परिधानो, इत्यादि को अग्रसारीत करने की एक कला है। इसे ही संस्कृति कहते हैं। संस्कृति एक आचरण के द्वारा की गयी विकाश कि एक कला है, जबकि कला और संस्कृति दोनों दो अलग - अलग स्वरूप है। दोनों एक दूसरे